



## आर्थिक विकास के लिए राजनीतिक निर्धारक: भारतीय राज्यों में शासन की गुणवत्ता और विकास असमानताओं का विश्लेषण

**Dr. Shaiphali Jain**

Assistant Professor (Economics), Faculty of Education, Teerthanker Mahaveer University Moradabad,

Email- shaiphali.jeducation@tmu.ac.in

**Dr Ravi Prakash Singh**

Assistant Professor (Political Science), Faculty of Education, Teerthanker Mahaveer University

Moradabad, Email- ravi.sipu@gmail.com, ravip.education@tmu.ac.in

DOI : <https://doi.org/10.5281/zenodo.18240784>

### ARTICLE DETAILS

**Research Paper**

**Accepted:** 24-12-2025

**Published:** 10-01-2026

### Keywords:

शासन की गुणवत्ता,  
राजनीतिक संस्थाएँ, आर्थिक  
विकास, राज्य क्षमता, भारतीय  
राज्य, संस्थागत विविधता,  
विकास असमानता,  
राजनीतिक अर्थव्यवस्था

### ABSTRACT

यह शोध पत्र भारतीय राज्यों के बीच आर्थिक विकास में अत्यंत विषम परिणामों को समझने के लिए राजनीतिक संस्थाओं और शासन की गुणवत्ता की भूमिका का विश्लेषण करता है। बिहार, तमिलनाडु, गुजरात, केरल और ओडिशा जैसे राज्यों के तुलनात्मक अध्ययन के माध्यम से, पत्र यह तर्क देता है कि आर्थिक विकास केवल बाजारीकरण और बुनियादी ढांचे पर निर्भर नहीं है, बल्कि राजनीतिक संस्थाओं की गुणवत्ता, प्रशासनिक क्षमता, और राज्य की पुनर्वितरणकारी क्षमता पर आधारित है। शोध पत्र दिखाता है कि केरल के भूमि सुधार और संस्थागत विकास ने दीर्घकालीन कल्याणकारी अपेक्षाएँ पैदा कीं; तमिलनाडु की केंद्रित मानव विकास नीति ने समावेशी वृद्धि सक्षम की; जबकि बिहार की संस्थागत कमजोरी और खराब प्रशासनिक क्षमता ने गरीबी और विकास पिछड़ेपन को स्थायी किया है। अर्थशास्त्र और राजनीति विज्ञान को समेकित करते हुए, यह पत्र दर्शाता है कि आर्थिक संरचनाएं विकास परिणामों के संभावित निर्धारक हैं, किंतु राजनीतिक संस्थाएं यह तय करती हैं कि क्या और कैसे ये संभावनाएँ वास्तविकता में परिणत होती हैं।



## 1. परिचय

भारतीय राज्यों के बीच आर्थिक विकास में अत्यंत विषमता दक्षिण एशियाई राजनीति अर्थव्यवस्था का सबसे पेचीदा और महत्वपूर्ण प्रश्न है। 75 वर्षों के आजाद राज्य के बाद भी, तमिलनाडु की प्रति व्यक्ति आय बिहार की तुलना में लगभग 4.5 गुना अधिक है। गरीबी दर तमिलनाडु में 2.4% है जबकि बिहार में 40% से अधिक है। केरल की साक्षरता दर 95.3% है जबकि बिहार की 74.3%। ये अंतर न तो प्राकृतिक संसाधनों में, न ही प्रारंभिक औद्योगिक आधार में, और न ही भौगोलिक स्थिति में सीधी व्याख्या द्वारा समझाए जा सकते हैं।

यह शोध पत्र एक मूलभूत प्रश्न पूछता है: यदि समान संघीय संस्थागत संरचना के भीतर कार्य करते हैं, तो भारतीय राज्य इतने विभिन्न विकास परिणामों तक पहुँचते हैं? क्या अर्थशास्त्रीय कारक राजनीतिक और संस्थागत कारकों की तुलना में अधिक महत्वपूर्ण हैं, या राजनीतिक संस्थाएं आर्थिक परिणामों को आकार देने का मूल माध्यम हैं?

पारंपरिक अर्थशास्त्रीय विश्लेषण विकास अंतरों को बुनियादी ढांचे, पूँजी निवेश, और बाजार खुलेपन से समझाने की प्रवृत्ति रखते हैं। वास्तव में, ये कारक महत्वपूर्ण हैं, परंतु ये अधूरे हैं। गुजरात के पास भारी उद्योग, उच्च निर्यात, और महत्वपूर्ण बुनियादी ढांचा निवेश है, परंतु इसकी गरीबी दर (9-11.7%) तमिलनाडु (2.4%) की तुलना में बहुत अधिक है। यह अंतर राजनीतिक और संस्थागत विकल्पों—मानव पूँजी में निवेश, सामाजिक नीतियों, और प्रशासनिक क्षमता—में निहित है।

इसलिए, यह पत्र एक एकीकृत दृष्टिकोण प्रस्तुत करता है जो राजनीतिक संस्थाओं को आर्थिक विकास का निर्धारक के रूप में देखता है। केरल का भूमि सुधार, तमिलनाडु की शिक्षा नीति, बिहार की संस्थागत कमजोरी, और ओडिशा की हाल की प्रशासनिक सुधार सभी राजनीतिक निर्णयों के परिणाम हैं, न कि भाग्य के। ये निर्णय लंबी अवधि में आर्थिक परिणामों को गहराई से प्रभावित करते हैं।

पत्र निम्नलिखित रूपरेखा में संगठित है। भाग 2 आर्थिक विकास पर संस्थागत और राजनीतिक प्रभाव संबंधी साहित्य की समीक्षा करता है। भाग 3 एक सैद्धांतिक ढाँचा प्रस्तुत करता है जो राजनीतिक संस्थाओं, राज्य क्षमता, और विकास परिणामों को समेकित करता है। भाग 4 डेटा स्रोत और कार्यप्रणाली का वर्णन करता है। भाग 5 भारतीय राज्यों का तुलनात्मक विश्लेषण प्रदान करता है। भाग 6 चर्चा और नीतिगत निहितार्थ प्रस्तुत करता है, और भाग 7 निष्कर्ष निकालता है।



## 2. साहित्य समीक्षा

### आर्थिक विकास में संस्थागत भूमिका

राजनीतिक अर्थव्यवस्था के क्षेत्र में, संस्थाएँ (institutions) को "खेल के नियम" के रूप में समझा जाता है जो आर्थिक सुव्यवस्था को आकार देते हैं। उत्तम संस्थाएँ—मजबूत संपत्ति अधिकार, प्रभावी न्यायपालिका, पारदर्शी नियामक ढाँचा, और जवाबदेही तंत्र—निवेश को प्रोत्साहित करते हैं, भ्रष्टाचार को कम करते हैं, और आर्थिक समृद्धि सक्षम करते हैं। इसके विपरीत, कमजोर संस्थाएँ अनिश्चितता बढ़ाती हैं, लागत बढ़ाती हैं, और उद्यमिता प्रेरणा को कम करती हैं।

भारतीय संदर्भ में, Subramanian (2007) एक महत्वपूर्ण विरोधाभास को रेखांकित करते हैं: भारत तेजी से आर्थिक विकास कैसे प्राप्त कर रहा है जबकि संस्थागत गुणवत्ता में कोई उल्लेखनीय सुधार नहीं हो रहा? उत्तर आंशिक रूप से यह है कि निजी बाजार संस्थाएँ सार्वजनिक संस्थाओं की कमजोरियों को बायपास कर सकते हैं, परंतु यह केवल अल्पकालीन समाधान है। दीर्घकालीन विकास, विशेषकर समावेशी विकास, मजबूत सार्वजनिक संस्थाओं पर निर्भर करता है।

### शासन की गुणवत्ता और विकास परिणाम

शासन (governance) संस्थाओं का व्यावहारिक संचालन है—कितनी कुशलता से सरकार सार्वजनिक सेवाएँ प्रदान करती है, कितना भ्रष्टाचार है, और कितनी जवाबदेही मौजूद है। साहित्य स्पष्ट दिखाता है कि शासन की गुणवत्ता विकास परिणामों से दृढ़ता से सहसंबंधित है।

भारत में, शासन की गुणवत्ता राज्यों में विषम रूप से वितरित है। NITI Aayog के प्रतिस्पर्धी संघवाद की पहल और SKOCH स्टेट ऑफ गवर्नेंस इंडेक्स दिखाते हैं कि आंध्र प्रदेश, गुजरात, और तेलंगाना शासन रूपांतरण में अग्रणी हैं, जबकि बिहार, झारखंड, और छत्तीसगढ़ राष्ट्रीय औसत से नीचे रहते हैं। महत्वपूर्ण रूप से, 2015-2019 में शासन में सुधार (डिजिटल इंफ्रास्ट्रक्चर, ई-गवर्नेंस में निवेश) हुआ, परंतु 2019-2024 में यह प्रवृत्ति स्थिर हुई गई, जो यह सुझाव देती है कि केवल तकनीकी सुधार पर्याप्त नहीं हैं—संरचनात्मक प्रशासनिक सुधार आवश्यक हैं।

### भूमि सुधार और संस्थागत विकास का पथ

केरल का अनुभव भूमि सुधार के महत्व को दिखाता है। 1950-1970 में, केरल की साम्यवादी सरकारों ने एक क्रांतिकारी भूमि सुधार कानून अधिनियमित किया जो:



- सभी भूमि पर छत लगाई
- किरायेदारों को काश्तकारी अधिकार दिए
- झोपड़ियों में रहने वालों को मकान की जमीन दी
- जमींदारी प्रथा को समाप्त किया

इन सुधारों के परिणाम स्वरूप, बेजमीन किसान भूमि मालिक बन गए, अनुपस्थित जमींदारवाद समाप्त हो गया, और संपत्ति असमानता नाटकीय रूप से कम हुई। अधिक महत्वपूर्ण रूप से, ये सुधार राजनीतिक गतिविधि को जन्म देते हैं—पुनर्वितरणकारी राजनीति के लिए मांग संरचित होती है, जो दीर्घकालीन कल्याणकारी अपेक्षाएँ पैदा करती हैं। केरल में, किसी भी राजनीतिक दल को (चाहे साम्यवादी हो या गैर-साम्यवादी) कल्याणकारी प्रदान करना पड़ता है, क्योंकि राजनीतिक गतिविधि इसे अपेक्षा करती है।

इसके विपरीत, बिहार ने कभी भूमि सुधार को प्रभावी ढंग से कार्यान्वित नहीं किया। 1950 के दशक में जमींदारी उन्मूलन के नाम पर कानून पारित किए गए, लेकिन भूमि जोतों को केंद्रित रखा गया, साम्यवादी संगठन कमजोर रहा, और राजनीतिक दबाव पुनर्वितरणकारी नीतियों को लागू करने के लिए अपर्याप्त रहा। परिणाम यह है कि कृषि भूमि असमानता बिहार में दशकों तक बनी रही, और कृषि का आधुनिकीकरण विफल रहा।

### राज्य क्षमता और प्रशासनिक कार्यक्षमता

विकास अर्थशास्त्र में, "राज्य क्षमता" (state capacity) तीन आयामों में समझी जाती है: निष्कर्षक क्षमता (कर एकत्र करना), जबरदस्ती क्षमता (कानून लागू करना), और प्रशासनिक क्षमता (सार्वजनिक सेवाएँ प्रदान करना)। भारत में, प्रशासनिक क्षमता विकास परिणामों में सबसे महत्वपूर्ण मानी जाती है।

तमिलनाडु में, प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्रों में डॉक्टरों की संख्या गुजरात की तुलना में 60% अधिक है; अस्पतालों में बिस्तरों की संख्या दोगुनी है। इसके विपरीत, बिहार का स्वास्थ्य व्यय प्रति व्यक्ति न्यून है, और ग्रामीण स्वास्थ्य सेवाओं की पहुँच न्यून है। ये अंतर राज्य बजट के आकार में अंतर का सीधा परिणाम नहीं हैं, बल्कि राजनीतिक प्राथमिकताओं का परिणाम हैं।

मानव विकास सूचकांक (HDI) विश्लेषण यह स्पष्ट करता है। केरल की HDI ऐतिहासिक रूप से उच्च है क्योंकि शिक्षा और स्वास्थ्य में राजनीतिक निवेश मजबूत है। बिहार की HDI निम्न है क्योंकि 1980 के दशक से ऐतिहासिक



निवेश कम रहा है। ओडिशा हाल के वर्षों में सुधार दिखा रहा है (0.310 से 0.618 तक) क्योंकि Biju Swasthya Kalyan Yojana जैसी योजनाओं ने स्वास्थ्य सेवाओं को प्राथमिकता दी है।

### राजनीतिक अनुप्रेरणा और विकास नीति

राजनीति विज्ञान के सिद्धांत में, सरकारें अल्पकालीन चुनावी परिणामों द्वारा प्रेरित होती हैं। यह अल्पकालिकता दीर्घकालीन विकास नीतियों में बाधा डाल सकता है। परंतु, जहाँ राजनीतिक प्रतिद्वंद्विता मजबूत है और नागरिक संगठन पुष्ट हैं (जैसे केरल में), सरकारें दीर्घकालीन सामाजिक विकास में निवेश करती हैं क्योंकि चुनावी प्रतिद्वंद्विता इसे माँग करती है। इसके विपरीत, जहाँ राजनीतिक प्रतिद्वंद्विता कमजोर है या गुटों और जातिगत राजनीति से ग्रस्त है, सरकारें तात्कालिक लाभ (अनाज सबसिडी, नकद हस्तांतरण) को प्राथमिकता देती हैं।

### 3. सैद्धांतिक ढाँचा

#### एकीकृत मॉडल

यह पत्र निम्नलिखित प्रस्ताव करता है: आर्थिक विकास परिणाम राजनीतिक संस्थाओं, शासन की गुणवत्ता, और राज्य क्षमता का संयुक्त कार्य है।

राजनीतिक संस्थाएँ विकास नीति की दिशा निर्धारित करती हैं। मजबूत संस्थागत संरचनाएँ (स्थिर दलीय प्रणाली, जवाबदेही तंत्र, आंतरिक दलीय लोकतंत्र) सरकारों को दीर्घकालीन विकास में निवेश करने के लिए प्रोत्साहित करती हैं। कमजोर संस्थाएँ (व्यक्तिगत राजनेता, प्रायोजन नेटवर्क, दलीय अस्थिरता) अल्पकालीन लाभवाद और संपत्ति विस्तार को प्रोत्साहित करती हैं।

शासन की गुणवत्ता नीति को कार्यान्वयन में परिणत करती है। अच्छे प्रशासन वाले राज्य नीतियों को कुशलता से लागू कर सकते हैं, भ्रष्टाचार कम कर सकते हैं, और सार्वजनिक संसाधनों को प्रभावी ढंग से वितरित कर सकते हैं। खराब शासन के राज्यों में, नीतियाँ विकृत हो जाती हैं, भ्रष्टाचार रिसाव बढ़ाता है (75-80% तक), और लक्ष्य आबादी को लाभ नहीं मिलता।

राज्य क्षमता (विशेषकर प्रशासनिक क्षमता) यह निर्धारित करती है कि कितनी अच्छी नीतियों को लागू किया जा सकता है। बड़ा राज्य बजट अपने आप में विकास सुनिश्चित नहीं करता; क्षमता (कुशल कर्मचारी, आधुनिक व्यवस्थापन, विकेंद्रीकृत संरचना) ही महत्वपूर्ण है।



## संचालन तंत्र

मॉडल तीन मुख्य तंत्रों के माध्यम से कार्य करता है:

**तंत्र 1:** मानव विकास निवेश। केरल और तमिलनाडु ने शिक्षा और स्वास्थ्य में अधिक निवेश किया है (कुल बजट का 6-8% बनाम बिहार में 3-4%)। यह राजनीतिक चुनाव (दोनों राज्यों में संगठित दलों और आंदोलनों के दबाव) और प्रशासनिक क्षमता (प्रभावी कार्यान्वयन) का परिणाम था। परिणाम साक्षरता दरों, कौशल, और उत्पादकता में दृश्यमान अंतर हैं।

**तंत्र 2:** संपत्ति संरचना और रोजगार। केरल के भूमि सुधार ने छोटे किसानों का एक वर्ग बनाया, जो बड़े भूमि मालिकों के एक वर्ग की तुलना में राजनीतिक रूप से अधिक शक्तिशाली और कृषि आधुनिकीकरण के लिए अधिक इच्छुक है। बिहार के विफल भूमि सुधार ने बड़े जोतों को स्थिर किया, जो पूँजी-गहन खेती में निवेश करने के लिए कम प्रेरित हैं।

**तंत्र 3:** प्रशासनिक प्रभावकारिता। सार्वजनिक कार्यक्रमों (MGNREGA, PDS, मिड-डे मील) की पहुँच और गुणवत्ता राज्य क्षमता पर निर्भर करती है। शिक्षा और स्वास्थ्य में निवेश अधिक मायने रखता है यदि कार्यान्वयन मजबूत है। अच्छे प्रशासन वाले राज्य स्कूलों और क्लीनिकों को पूरी तरह से स्टाफ करते हैं, सामग्री निबंध करते हैं, और परिणामों को ट्रैक करते हैं। खराब प्रशासन वाले राज्यों में, स्कूल खाली रहते हैं, शिक्षक अनुपस्थित रहते हैं, और क्लीनिक सेवाएँ मुश्किल से कार्य करती हैं।

## 4. आँकड़े एवं कार्यप्रणाली

### डेटा स्रोत

यह अध्ययन मिश्रित-विधि दृष्टिकोण का उपयोग करता है:

1. राज्य-स्तरीय विकास सूचकांक: NITI Aayog के SDG India Index, SKOCH शासन सूचकांक, और राज्य मानव विकास रिपोर्ट
2. आर्थिक डेटा: शुद्ध राज्य घरेलू उत्पाद (NSDP), प्रति व्यक्ति आय, गरीबी दरें (राष्ट्रीय नमूना सर्वेक्षण)
3. स्वास्थ्य और शिक्षा मेट्रिक्स: साक्षरता दरें, सकल नामांकन अनुपात (GER), शिशु मृत्यु दर, प्रजनन दर
4. शासन संकेतक: भ्रष्टाचार की धारणा, डिजिटल सेवाएँ, अदालत दक्षता
5. गुणात्मक अध्ययन: केरल के भूमि सुधार, तमिलनाडु की शिक्षा नीति, बिहार के संस्थागत विफलता पर विद्वत साहित्य

## विश्लेषणात्मक दृष्टिकोण

पत्र चार राज्यों का विस्तृत तुलनात्मक विश्लेषण प्रदान करता है:

- केरल: उच्च HDI, संस्थागत विकास की सफलता की मिसाल
- तमिलनाडु: संतुलित आर्थिक और मानव विकास
- गुजरात: आर्थिक वृद्धि परंतु सामाजिक विकास में पिछड़ापन
- बिहार: संस्थागत विफलता और विकास पिछड़ेपन

## 5. भारतीय राज्यों का तुलनात्मक विश्लेषण

### 5.1 संस्थागत विकास और मानव विकास

केरल की संस्थागत सफलता:

1950-1970 के दशक में, केरल के साम्यवादी सरकारों ने भूमि सुधार को अमल में लाया जो भारत में अद्वितीय था। कानून ने: (1) सभी कृषि भूमि पर 20-30 एकड़ की छत लगाई; (2) किरायेदारों को मालिकाना अधिकार दिए; (3) झोपड़ियों में रहने वालों को 1000 वर्ग फुट तक की जमीन दी; (4) जमींदारों को मुआवजा दिया परंतु भूमि स्वामित्व में परिवर्तन किया।

इसके परिणाम राजनीतिक और आर्थिक दोनों हैं। राजनीतिक रूप से, बेजमीन किसानों का एक नया वोटर आधार बना जो पुनर्वितरणकारी नीतियों को मांग करता है। आर्थिक रूप से, छोटे किसानों को भूमि मालिकी से आय स्थिरता मिली, जो पूँजी संचय और शिक्षा में निवेश को सक्षम करती है।

परिणाम दृश्यमान हैं। केरल की HDI भारत में सर्वोच्च रही है (वर्तमान में ~0.78); साक्षरता दर 95.3% है; महिला साक्षरता पुरुष के समान है; जन्म दर 1.7 है (राष्ट्रीय 2.0); और शिशु मृत्यु दर केवल 10 प्रति 1000 जन्म है। इसके अतिरिक्त, केरल का कल्याणकारी ढाँचा (शिक्षा और स्वास्थ्य पर प्रति व्यक्ति सार्वजनिक व्यय राष्ट्रीय औसत से 50% अधिक) संस्थागत रूप से स्थिर है—किसी भी राजनीतिक दल को इसे बनाए रखना पड़ता है क्योंकि राजनीतिक प्रतियोगिता इसे माँग करती है।

गुजरात की आर्थिक वृद्धि, लेकिन सामाजिक विकास में पिछड़ापन:

गुजरात ने उदारीकरण के बाद भारी उद्योग, निर्यात, और कुल GDP वृद्धि में असाधारण प्रदर्शन किया है। राज्य भारत की जनसंख्या का 5% है लेकिन GDP का 8% और निर्यात का 25% प्रतिनिधित्व करता है। 2012-2023 में वृद्धि दर 8% वार्षिक रही।



परंतु, सामाजिक विकास में गुजरात पिछड़ा हुआ है। गरीबी दर 9-11.7% है (तमिलनाडु में 2.4%); GER उच्च शिक्षा में 30-35% है (तमिलनाडु में 47%); ग्रामीण स्वास्थ्य सेवाएँ कमजोर हैं; महिला शिक्षा में लिंग अंतराल (साक्षरता 78% है जबकि राष्ट्रीय 71%) पर्याप्त है।

यह विषमता राजनीतिक विकल्प का परिणाम है। गुजरात की सरकार भारी उद्योग, बुनियादी ढांचा, और व्यावसायिक वातावरण को प्राथमिकता देती है। शिक्षा और स्वास्थ्य में व्यय (राज्य बजट का 4.5%) तमिलनाडु (8%) से कम है। आंतरिक प्रशासनिक क्षमता भी मायने रखती है: तमिलनाडु के ग्रामीण क्षेत्रों में प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्रों में डॉक्टर 60% अधिक संख्या में हैं गुजरात की तुलना में।

तमिलनाडु: संतुलित विकास:

तमिलनाडु ने आर्थिक वृद्धि (2024-25 में 11% GSDP वृद्धि) के साथ मानव विकास (2.4% गरीबी, 82% साक्षरता, 47% GER उच्च शिक्षा) को संतुलित किया है। यह संतुलन ऐतिहासिक कारकों (सामाजिक सुधार आंदोलन, द्रविड़ राजनीति) और आधुनिक राजनीतिक चुनावों (शिक्षा और स्वास्थ्य को बजट का 8% देना) से उत्पन्न है।

बिहार: संस्थागत विफलता:

बिहार की विफलता एक अलग कथा है। 1980 के दशक से, बिहार का प्रति व्यक्ति आय राष्ट्रीय औसत का 1/3 रहा है। साक्षरता 74.3% है; शिशु मृत्यु दर 27 प्रति 1000 है; HDI सभी बड़े राज्यों में सबसे कम है।

क्यों? साहित्य तीन मुख्य कारण चिन्हित करता है:

1. भूमि सुधार की विफलता: बिहार का 1950 का जमींदारी उन्मूलन कानून प्रभावी नहीं था। बड़े जोत बने रहे, साम्यवादी संगठन कमजोर रहा, और भूमि असमानता दशकों तक बनी रही।
2. सार्वजनिक शिक्षा में निवेश की कमी: बिहार का शिक्षा व्यय (GSDP का 3.5%) तमिलनाडु (5%) से कम है। परिणाम: केवल 16% दर उच्च शिक्षा में नामांकन; गुणवत्ता बहुत निम्न है।
3. औद्योगीकरण में विफलता: 1990-2010 में, जबकि भारत सेवा क्षेत्र में विस्तारित हुआ, बिहार कृषि-निर्भर रहा। 2024 में, कृषि में 34% कार्यबल है परंतु केवल 18% GSDP का योगदान है—गहरी उत्पादकता विफलता।



परिणाम: बिहार के शहरी और नियोजित श्रमिक, पास के राज्यों में जाते हैं (गुजरात, महाराष्ट्र, तेलंगाना) जहाँ बेहतर अवसर हैं। यह "पलायन" बिहार की विकास पिछड़ेपन को और गहरा करता है क्योंकि कुशल कार्यबल निकल जाता है।

## 5.2 शासन की गुणवत्ता और प्रशासनिक क्षमता

आंध्र प्रदेश और तेलंगाना: डिजिटल शासन:

SKOCH और CareEdge रेटिंग के अनुसार, आंध्र प्रदेश और तेलंगाना शासन रूपांतरण में अग्रणी हैं, विशेषकर डिजिटल सेवाओं, अदालत दक्षता, और व्यावसायिक पर्यावरण में। यह निवेश विकास को सक्षम करता है: दोनों राज्यों में IT, फार्मास्यूटिकल्स, और आधुनिक निर्माण क्षेत्र तेजी से बढ़ रहे हैं।

परंतु, शासन के तकनीकी अपग्रेड अकेले विकास सुनिश्चित नहीं करते। 2019 के बाद से, शासन रूपांतरण में वृद्धि की दर स्थिर हुई, जो यह सुझाव देती है कि "निम्न-लटकते फल" (तकनीकी सुधार) समाप्त हो गए हैं, और अब गहरे संरचनात्मक सुधार (शिक्षा, स्वास्थ्य, कौशल) की आवश्यकता है।

बिहार और झारखंड: संस्थागत जड़ता:

बिहार और झारखंड की प्रशासनिक क्षमता SKOCH सूचकांक में राष्ट्रीय औसत से नीचे रहती है। भ्रष्टाचार की धारणा (भारतीय सर्वेक्षण में) दिखाती है कि बिहार में 50% नागरिकों ने आधिकारिक सेवाएँ प्राप्त करने के लिए रिश्वत दी है। यह केवल "नैतिक समस्या" नहीं है; यह विकास की समस्या है। भ्रष्टाचार लागत बढ़ाता है (परियोजनाएँ 50% अधिक महँगी होती हैं), निवेशकों को दूर करता है, और गरीब लोगों को सार्वजनिक सेवाओं से वंचित करता है।

## 5.3 राज्य क्षमता और विकास परिणाम

ओडिशा एक दिलचस्प केस है। 1992-93 में, इसकी HDI 0.310 थी (केरल का आधा)। 2021-22 तक, यह 0.618 तक पहुँच गई—अभी भी राष्ट्रीय औसत (0.648) से कम परंतु तेजी से सुधर रहा है।

यह सुधार किस कारण हुआ? Biju Swasthya Kalyan Yojana (स्वास्थ्य योजना) और KALIA (कृषक सहायता) जैसी योजनाओं ने जीवन प्रत्याशा को 70.3 वर्ष तक बढ़ाया। ग्रामीण विकास में निवेश (प्रधान मंत्री ग्राम सड़क योजना के तहत सड़कें) व्यापार संपर्क सक्षम किया। परंतु, शिक्षा की गुणवत्ता अभी भी कमजोर है, और उच्च शिक्षा तक पहुँच सीमित है।



ओडिशा की कथा सुधार की संभावना दिखाती है यदि राजनीतिक इच्छा मौजूद है।

## 6. चर्चा

### राजनीतिक संस्थाएँ आर्थिक संरचनाओं को आकार देती हैं

यह विश्लेषण दिखाता है कि राजनीतिक संस्थाएँ केवल "सुपरस्ट्रक्चर" (सरकारी ढाँचे) नहीं हैं बल्कि आर्थिक आधार को ही आकार देती हैं। केरल का भूमि सुधार भू-स्वामित्व संरचना को बदल गया, जो बदले में निवेश प्रोत्साहन, बचत दर, और शिक्षा में निवेश को बदल गया। बिहार की राजनीतिक विफलता भूमि सुधार को लागू करने में एक आर्थिक संरचना को कायम रखा जिसने छोटी किसानों को दबा दिया।

यह महत्वपूर्ण है क्योंकि यह पारंपरिक अर्थशास्त्रीय विचार को चुनौती देता है कि "बाजार" स्वतः-सुधारक है। वास्तव में, बाजार संरचनाएँ (किसके पास भूमि है, किसे शिक्षा है) राजनीतिक निर्णयों द्वारा नियंत्रित होती हैं।

### राज्य क्षमता एक अलग चर है

आर्थिक वृद्धि मॉडल अक्सर "समान नीति सभी जगह समान परिणाम देती है" मान लेते हैं। बिल्कुल नहीं। गुजरात और तमिलनाडु दोनों ने औद्योगीकरण को प्रोत्साहित किया, परंतु तमिलनाडु ने एक साथ शिक्षा और स्वास्थ्य को प्राथमिकता दी। गुजरात ने भारी उद्योग को प्राथमिकता दी। दोनों "काम करते" हैं, परंतु समावेशिता (गरीबी में कटौती) अलग है।

क्यों? प्रशासनिक क्षमता। तमिलनाडु सार्वजनिक शिक्षा में अधिक निवेश कर सकता है क्योंकि प्रशासन इसे कुशलता से चला सकता है। बिहार के सरकारी स्कूल अक्सर अनुपस्थित शिक्षकों और कमजोर व्यवस्थापन से ग्रस्त हैं।

### नीतिगत निहितार्थ

केंद्रीय सरकार के लिए:

1. क्षमता निर्माण को प्राथमिकता दें: पिछड़े राज्यों को शिक्षा और स्वास्थ्य में निवेश के लिए प्रोत्साहन देना अपर्याप्त है यदि प्रशासनिक क्षमता दुर्बल है। क्षमता निर्माण (कर्मचारी प्रशिक्षण, डिजिटलीकरण, परिणाम-ट्रैकिंग) को धन के साथ आना चाहिए।



2. राजनीतिक आंदोलनों को समर्थन दें: भूमि सुधार, शिक्षा अभियान, और स्वास्थ्य कार्यक्रम जब स्थानीय आंदोलनों द्वारा समर्थित होते हैं तो टिकाऊ होते हैं। यह केंद्रीय सरकार "निर्माण" नहीं कर सकती, लेकिन समर्थन कर सकती है।
3. संघीय संतुलन में सुधार करें: राज्यों को GSDP का 62% व्यय करना पड़ता है परंतु केवल 37% राजस्व एकत्र कर सकते हैं। यह क्षमता को सीमित करता है। केंद्र को या तो अधिक व्ययशील जिम्मेदारियाँ स्वीकार करनी चाहिए या अधिक कर आय हस्तांतरित करनी चाहिए।

राज्य सरकारों के लिए:

1. शिक्षा को प्राथमिकता दें: सभी तुलनात्मक साक्ष्य दिखाता है कि शिक्षा वर्षों में सर्वोच्च ROI प्रदान करती है। बिहार को शिक्षा पर GSDP का 6% (वर्तमान 3.5% के बजाय) व्यय करना चाहिए।
2. कल्याण को दीर्घकालीन प्रतिबद्धता बनाएँ: केरल का सफल अनुभव यह दिखाता है कि जब कल्याण संस्थागत रूप से स्थिर होता है (सभी दलों द्वारा प्रत्याशित), तो यह सतत विकास को सक्षम करता है। अल्पकालीन "योजनाएँ" जो चुनाव के साथ प्रारंभ और समाप्त होती हैं, प्रभावी नहीं हैं।
3. भूमि और संपत्ति नीतियों को सुधारें: जहाँ भूमि एकाग्रता अभी भी अधिक है (बिहार, उत्तर प्रदेश), सुधार संभव है। छोटे किसानों के लिए भूमि वितरण न केवल आर्थिक है बल्कि राजनीति को भी बदल सकता है।

## 7. निष्कर्ष

यह पत्र दिखाता है कि भारतीय राज्यों के बीच विकास अंतर मुख्य रूप से राजनीतिक संस्थाओं, शासन की गुणवत्ता, और राज्य क्षमता में अंतर के कारण हैं। केरल के सफल संस्थागत विकास, तमिलनाडु के संतुलित सामाजिक-आर्थिक विकास, गुजरात की अधूरी औद्योगिक वृद्धि, और बिहार की विकास विफलता सभी राजनीतिक निर्णयों की श्रृंखला का परिणाम हैं।

अर्थशास्त्र और राजनीति विज्ञान को एकीकृत दृष्टिकोण विकास को समझने के लिए महत्वपूर्ण है। अर्थशास्त्री अकेले आर्थिक संरचनाएँ (कृषि, उद्योग) देख सकते हैं परंतु यह नहीं समझ सकते कि वे कैसे बनीं। राजनीति विज्ञानी राजनीतिक संस्थाओं को देख सकते हैं परंतु अर्थव्यवस्था को उनके द्वारा आकार देने का तंत्र नहीं समझ सकते। एकीकृत विश्लेषण दोनों को प्रदर्शित करता है।



भविष्य की दिशा स्पष्ट है: पिछड़े राज्यों को संस्थागत और प्रशासनिक सुधार की आवश्यकता है, न कि केवल धन। केंद्रीय और राज्य सरकारों को राजनीतिक इच्छा प्रदर्शनी करनी चाहिए, जैसे केरल ने 1957 में की थी और ओडिशा हाल में कर रहा है। बिना इस संकल्प के, विकास असमानताएँ बनी रहेंगी।

### संदर्भ सूची

- Carreras, M., & Castañeda, A. (2015). Institutional capacity and the quality of public services in Latin America. *World Development*, 71, 88–105.
- Chhibber, P. K., & Nooruddin, I. (2004). Do institution structures determine the success of decentralisation plans? *Journal of Theoretical Politics*, 16(4), 433–460.
- Election Commission of India. (2024). *General Elections 2024: Performance Overview*. Government of India.
- Engel, S., & Skaar, E. (2005). Coordination between the executive and judiciary: The case of agrarian disputes in Peru. *Journal of Latin American Studies*, 37(1), 109–135.
- Mitra, S. (1992). Power, protest and participation: Local elites and the politics of development in India. *Routledge*.
- NITI Aayog. (2023). *SDG India Index 2023-24*. Government of India Publications.
- NIPFP. (2012). *Bihar: What Went Wrong? And What Changed*. National Institute of Public Finance and Policy.
- Rodrik, D., & Subramanian, A. (2005). From "Hindu growth" to productivity surge: The mystery of the Indian growth transition. *IMF Staff Papers*, 52(2), 193–228.
- Suri, K. C. (2009). Political cycles and economic growth in India. *Economic and Political Weekly*, 44(48), 63–71.
- Vaidya, R. (2023). State governance transformation in Indian states 2014-2024. *SKOCH State of Governance Index 2023*. SKOCH Ratings.
- World Bank. (2023). *Data Portal: India State Indicators*. World Bank South Asia Division.